राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन, 2009 - कार्य योजना

13 सितम्बर, 2009 की सायं यहाँ सम्पन्न तीन दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन, 2009 में भारत और नेपाल से आये 1500 से भी अधिक मीडियाकर्मी, मीडिया शिक्षाविद, प्रकाशकों ने भाग लिया। सम्मेलन का विषय था 'शान्ति एवं विकास के लिए आध्यात्मिकता-मीडिया की भूमिका' यह सम्मेलन 11 सितम्बर को आबू रोड (राज.) स्थित शांतिवन परिसर में आरम्भ हुआ था।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान के मीडिया प्रभाग द्वारा आयोजित इस सम्मेलन में मीडिया से सम्बन्धित सभी मुद्दों पर खुले सत्रों, कार्यशालाओं, टॉक शो तथा सामूहिक चर्चाओं के माध्यम से विस्तार में चर्चायें की गयीं। इन चर्चाओं के फलस्वरूप निम्न आठ बिन्दूओं की कार्ययोजना को अंतिम रूप दिया जा सका।

1: सामाजिक परिवर्तन में जनसंचार माध्यमों की अत्यधिक प्रभावशाली भूमिका होने के कारण और विकास, सकारात्मक और मूल्यनिष्ठ समाचार, विचार, कहानियां, कार्यक्रम, मुद्दों और घटनाक्रमों को अधिक समय और स्थान दिया जाना चाहिए वनिस्पत चकाचौंध अफवाहों, अपराध, यौन सम्बन्धी हिंसा, भौंडापन और सनसनी।

2: इस प्रसंग में यह अत्यन्त जरूरी है और समय की मांग भी है कि मीडियाकर्म में पत्रकारिता के नैतिक सिद्धांतों, आचार संहिता, सकारात्मक मूल्य, सत्यता, पारदर्शिता, ईमानदारी, अखण्डता तथा एक विशाल दृष्टिकोण का होना जरूरी है।

3: इसके लिए एक वैकल्पिक क्रियाशील समूह निर्मित किया जाना चाहिए जिसमें समान विचारों, सामाजिक सरोकारों को गम्भीरत से लेने वाले मूल्यनिष्ठ पत्रकारों, जननेताओं, समाज सेवियों और आध्यात्मिक लोगों का समावेश हो और जो इन उद्देश्यों को आन्दोलन का रूप दे सकें। जिससे साथी पत्रकारों और अन्य मीडिया संगठनों में जागरूकता का विस्तार हो। ऐसा प्रयास जमीनी स्तर पर पत्रकारिता और मीडियाकर्म में संलग्न संगठनों के बीच में नैतिकता और मूल्यों पर आधारित पत्रकारिता को प्रोत्साहित के लिये किया जाना चाहिए। इस कार्य के लिए ब्रह्माकुमारी संगठन, मुल्यानुगत मीडिया अभिक्रम समिति और ग्लोबल फोरम फार पब्लिक रिलेशन जैसे संगठनों के साथ पत्रकारिता के नेटवर्किंग का विस्तार किया जाना चाहिए।

4: आज मीडिया जिस स्तर की अपेक्षाओं, दबाव, चुनौतियां, खतरे, प्रलोभन, धमकी भरे वातावरण में कार्य कर रहा है उसे दृष्टिगत रखते हुए यह सर्वसम्मत विचार उभर कर आया कि मीडिया के लोगों में शांति, आत्मिक शक्ति, सकारात्मकता, साहस, संतोष, सृजनात्मकता और प्रतिबद्धता की भावना का संचार हो जिससे वे अपने मीडियाकर्म में वांछित स्वतंत्रता, भयमुक्तता और ईमानदारी का अनुभव कर सके। इसके लिए उनमें आध्यात्मिक ज्ञान, राजयोग ध्यान, बुनियादी मूल्य, सरल सकारात्मक स्वस्थ जीवनशैली को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

5: ब्रह्माकुमारीज जैसे जिम्मेदार और जबाबदेह संस्थाओं, समूहों और व्यक्तियों के द्वारा समन्वित प्रयासों की अत्यधिक आवश्यकता है ताकि मीडियाकर्मी सकारात्मक, क्रियाशील, स्वस्थ, अहिंसात्मक, संचार प्रणाली की संस्कृति को अपनाकर लोगों तक ऐसे संदेश सफलता पूर्वक प्रसारित कर सकें। इसके लिए स्वस्थ विचारों वाले लोगों विभिन्न व्यवसायियों, कर्मियों एवं संगठनों को आध्यात्मिक प्रशिक्षण, मूल्यनिष्ठ, अहिंसात्मक और भद्र संचार प्रणाली अपनाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

6: मीडियार्मियों को शांतिदूतों के रूप में सजग, चुस्त, सकारात्मक, संतुलित होकर अपनी प्रवृत्ति में वैश्विक दृष्टिकोण के साथ मानवीय मूल्यों सामाजिक जीवन और पर्यावरण को उन्नत बनाने में योगदान देना चाहिए।

7: समय में बदलाव के साथ प्रौद्योगिकी परिवर्तन के कारण न मीडिया स्वतंत्रता और सृजनात्मकता और ना ही उससे जुड़ी हुई सामाजिक जिम्मेदारी को त्यागा जाना चाहिए और न तो उसके साथ कोई समझौता किया जाना चाहिए। मीडिया की स्वाधीनता जहाँ अत्यावश्यक है वहीं उसका दुरूपयोग और उसके द्वारा स्वार्थ सिद्धी के लिए सीमाओं का उल्लंघन का भी सख्ती से नियमित और नियंत्रित किया जाना चाहिए। यह नियमन विशेष करके इलेक्ट्रानिक और इन्टरनेट मीडिया के मामले में जिनके त्वरित वैश्विक दुष्प्रभाव परिलक्षित होने लगते हैं, स्वनियंत्रण या कानूनी अधिनियम के द्वारा किया जा सकता है।

8: जनसम्पर्क के योगदान के महत्व को भी प्रतिपादित किया गया। जनसम्पर्क के क्षेत्र में जनसम्पर्क का नया मॉडल गोल्डन ट्रैंगल (Golden Triangle) अपनाये जाकर व्यवसायिकता, नैतिकता और आध्यात्मिकता के त्रिकोणीय कर्म किया जाना चाहिए जिससे जनसम्पर्क कर्म में उत्कृष्टता प्राप्त किया जा सके और प्रेम, सच्चाई,न्याय, अखण्डता और ईमानदारी के साथ समाज की सेवा की जा सके